इग्नू द्वारा संचालित बी०एड० कार्यशाला की सार्थकता: एक अध्ययन

***डॉ० चन्द्रावती जोशी**

किसी भी देश की उन्नति तथा विकास जिस तरह से नियोजित तथा गुणवत्ता युक्त शिक्षा से प्रभावित होता है, उसी प्रकार प्रभावपूर्ण शिक्षण दक्षतापूर्ण शिक्षकों के प्रभावपूर्ण शिक्षण से प्रभावित होता है क्योंकि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में तीन धुरी अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। शिक्षक, पाठयक्रम और विद्यार्थी। विद्यार्थी अधिगम के लिए आधार शिक्षक के महत्व को स्वीकार करते हुए यूनेस्को (1994) ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि शिक्षक 21वीं शताब्दी का नेतृत्वकर्ता होगा और कल के भविष्य अर्थात् युवाओं को व्यवहारिक तथा सशक्त पहचान देने में उसका प्रभावी योगदान होगा। शिक्षा में गुणवत्ता तभी प्राप्त की जा सकती है जब शिक्षक उस व्यवसाय में प्रशिक्षित हो वह चाहे शिक्षण व्यवस्था ही क्यों न हो। शिक्षण कौशल का होना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए माध्यमिक स्तर पर शिक्षण कार्य करने हेतु बी0एड0 पाठयक्रम की डिग्री का होना अत्यन्त आवश्यक है। माध्यमिक स्तर पर शिक्षण व्यवसाय हेतु प्रदान की जाने वाली यह डिग्री उत्तराखण्ड के न केवल राजकीय बी0एड0 महा0वि0 में प्रदान की जा रही है अपितु रा0 स्ववित्त पोषित शिक्षण संस्थानों एवं निजी बी0एड0 संस्थानों में भी प्रदान की जा रही है। एन0सी0टी0ई0 से मान्याता प्राप्त यह डिग्री इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के द्वारा गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्रदान करने में दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। 1885 में अधिनियम के आधार पर इग्नू (इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय) की स्थापना की गई। यह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालय है, इससे प्रेरित होकर राज्य सरकारों ने मुक्त दूरस्थ शिक्षा के केन्द्र खोले हैं। यह दूरस्थ शिक्षा के केन्द्र न केवल स्नातक, परास्नातक सर्टिफिकेट कोर्स, डिप्लोमा व डिग्री प्रदान करते हैं, अपितु इग्नू द्वारा शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करने हेतु बी०एड० पाठ्यक्रम का संचालन भी किया जाता है। यह बी०एड० पाठ्यक्रम दो वर्षीय होता है। इसमें पंजीकृत छात्र/छात्राओं का चयन राष्ट्रीय स्तर पर प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद किया जाता है। प्रथम सत्र में 100 प्रशिक्षणार्थी नामांकित होते हैं। यह दो वर्षीय पाठ्यक्रम न केवल सैद्धान्तिक ज्ञान अपितु व्यवहारिक ज्ञान भी प्रदान करता है। सैद्धान्तिक मूल्यांकन हेतु 70 प्रतिशत अधिभार अंक दिया जाता है जबकि प्रयोगात्मक मूल्यांकन हेतु 30 प्रतिशत का अधिभार अंक दिया जाता है जिसमें कि 12 दिवसीय दो कार्यशाला (24 दिन) को पूर्ण करना होता है।

यह द्विवर्षीय बी०एड० पाठ्यक्रम एन०सी०टी०ई० से मान्यता प्राप्त है। वर्ष 1988 में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के प्रारम्भिक प्रालेख 'काम्पीटैन्सी' आधारित कमिटमेंट ओरियंटेड टीचर एजुकेशन फॉर क्वालिटी स्कूल एजुकेशन' में गुणवत्तापूर्ण अध्यापक शिक्षा की अत्यन्त व्यापक रूपरेखा प्रस्तुत की है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आवश्यक शर्त दक्षतापूर्ण शिक्षण कार्य है। इस कथन से स्पष्ट है कि शिक्षक की दक्षता का प्रभाव सम्पूर्ण समाज के निर्माण में निर्णायक होता है। राष्ट्र निर्माण में गुणात्मक उच्च शिक्षा अपनी प्रभावी भूमिका का निर्वहन करती है।

यालिन (1992) ने भविष्य में माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों की शैक्षिक दक्षता को विकसित करने के उपागमों के चयन तथा महाविद्यालयी शिक्षा के दृष्टिकोण से शैक्षिक तकनीकी की परिचयात्मक पाठ्यक्रमों की विधियों और शैक्षिक तकनीकी दक्षताओं में समन्वय को प्राथमिकता के साथ अध्ययन में प्रकट किया।

इन अध्ययनों से यह दृष्टिगोचर होता है कि शिक्षण दक्षता पर आधारित होगा, तभी गुणवत्ता आयेगी। इसी शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया में दक्षतापूर्ण शिक्षण को आधार बनाते हुए इग्नू बी०एड० पाठ्यक्रम को करते हुए सेवारत प्राथमिक/माध्यमिक शिक्षक गुणवत्ता के सभी आयामों को दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से प्राप्त करते हैं। यह द्विवर्षीय व्यवसायिक पाठ्यक्रम न केवल ज्ञान में वृद्धि, शिक्षण कौशल में वृद्धि करता है अपितु सेवारत शिक्षकों के अपने विषय में पारंगत होने के साथ ही आत्मविश्वास, आत्मसम्प्रेषण कौशल व व्यक्तित्व विकास भी करता है। सेवारत माध्यमिक शिक्षकों तक ज्ञान को आसानी व रुचिकर ढंग से कैसे अधिगम कर्ता तक पहुँचाया जाय, जिससे कि छात्र/छात्राओं को कक्षा–शिक्षण में रुचि उत्पन्न हो जाए। इन्हीं महत्वपूर्ण

*असिस्टेन्ट प्रोफेसर (बी०एड० संकाय), एम०बी०जी०पी०जी० कॉलेज, हल्द्वानी

बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए जूनियर/माध्यमिक स्तर पर अध्यापन कार्य कर रहे महिला एवं पुरुष शिक्षकों से कार्यशाला में दिये गये ज्ञान एवं अनुभव पर आधारित प्रतिक्रिया मापनी द्वारा विचारों को जानने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्यः–

1. इग्नू द्वारा संचालित बी०एड० की 12 दिवसीय कार्यशाला के द्वारा विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों के प्रति प्रशिक्षणार्थियों की प्रतिक्रिया का अध्ययन करना।
2. कार्यशाला में सम्मिलित महिला एवं पुरुष प्रशिक्षणार्थियों से सन्दर्भित शैक्षिक गतिविधियों से सन्दर्भित प्रतिक्रिया का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. कार्यशाला को अधिक प्रभावपूर्ण बनाने हेतु प्रतिभागियों द्वारा दिये गये सुझावों को प्रस्तुत करना।

शोध प्रश्नः–

1. क्या इग्नू बी०एड० कार्यशाला सेवारत माध्यमिक/प्राथमिक शिक्षकों के शिक्षण कौशल में वृद्धि करने में सहायक है?
2. क्या कार्यशाला शिक्षकों की ज्ञान वृद्धि करने में सहायक है?
3. क्या कार्यशाला में करायी गयी विभिन्न शैक्षिक व व्यवहारिक गतिविधियाँ व्यक्तित्व विकास में सहायक रही?
4. कार्यशाला में नवाचारों का प्रयोग कितना किया जा रहा है?
5. कार्यशाला में परस्पर अन्तःक्रिया का प्रभाव सकारात्मक है या नहीं?
6. क्या वास्तव में इग्नू बी0एड0 पाठ्यक्रम में आवश्यक बदलाव की आवश्यकता है?

शोध की परिसीमाएँः–

1. यह शोध द्वितीय वर्ष के एम0बी0जी0पी0जी0 कॉलेज, हल्द्वानी के इग्नू अध्ययन केन्द्र में पंजीकृत बी०एड० महिला व पुरुष शिक्षकों पर किया गया है।
2. इसमें 50 पुरुष एवं 50 महिला शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।
3. सेवारत शिक्षकों की कार्यशाला के प्रति प्रतिक्रियाओं को स्वनिर्मित प्रश्नावली के द्वारा जाना गया।
4. प्रतिक्रियाओं का विश्लेशण प्रतिशत के आधार पर किया गया।

अध्ययन विधिः–

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया हैः–

प्रतिदर्शः– इस अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में इग्नू अध्ययन केन्द्र हल्द्वानी में पंजीकृत 100 इग्नू बी०एड० द्वितीय वर्ष के सेवारत प्राथमिक जूनियर/माध्यमिक शिक्षक जिनमें 50 महिला व 50 पुरुष शिक्षकों को प्रतिदर्ष के रूप में चयनित किया गया है।

शोध उपकरणः– शोधकर्ती ने इग्नू बी०एड० कार्यशाला से सम्बन्धित विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित स्वनिर्मित प्रतिक्रिया मापनी का निर्माण किया, जिसमें 15 प्रश्नों को सम्मिलित किया गया।

प्रदत्त संकलन एवं विश्लेषणः– प्रतिक्रिया मापनी में से सूचनाओं को प्राप्त करके महिला व पुरुष शिक्षकों के दृष्टिकोण का अलग–अलग संकलन किया गया है। अध्ययनकर्ता के द्वारा कार्यशाला में कराई गई विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों पर आधारित सूचनाओं के (गुणात्मक शोध विधि के अन्तर्गत) प्रतिशत विश्लेषण किया गया।

इग्नू बी०एड० की 12 दिवसीय कार्यशाला में प्रतिभाग करने के पश्चात् हुए लाभ पर प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाः–

इस 12 दिवसीय कार्यशाला में प्रतिभाग करने के पश्चात् महिला व पुरुष शिक्षकों के द्वारा की गई प्रतिक्रिया को प्रतिशत के द्वारा दर्शाया गया। इसके पश्चात् सम्मिलित रूप में गुणात्मक विश्लेषण किया गया।

पुरुष/महिला प्रशिक्षणार्थियों की कार्यशाला के विभिन्न आयामों के प्रति दी गई प्रतिक्रिया का प्रतिशत का विश्लेषण

क्र0 सं0	आयाम	महिला			पुरूष		
		सहमति	अनिश्चित	असहमत	सहमति	अनिश्चित	असहमत
1	शिक्षण कौशल में वृद्धि	48(96%)	02(04%)	–	38(76%)	04(08%)	08(16%)
2	ज्ञान में वृद्धि	40(80%)	04(08%)	06(12%)	39(78%)	03(06%)	08(16%)
3	गतिविधियाँ व्यक्तित्व विकास में सहायक	36(72%)	05(10%)	09(18%)	40(80%)	02(04%)	08(16%)
4	नवाचारों का प्रयोग	45(90%)	02(04%)	03(06%)	40(80%)	04(08%)	06(12%)
5	अन्तःक्रिया से लाभ	35(70%)	05(10%)	10(20%)	35(70%)	02(04%)	13(26%)
6	सम्प्रेषण कौशल का विकास	36(72%)	03(06%)	11(22%)	32(64%)	8(16%)	10(20%)
7	पाठ्यक्रम में परिवर्तन की आवश्यकता	45(90%)	01(02%)	04(08%)	42(84%)	01(02%)	07(14%)

1. **शिक्षण कौशल में वृद्धिः**– कार्यशाला में प्रतिभाग करने वाले 96 प्रतिशत महिला प्रशिक्षणार्थियों ने से स्वीकार किया है कि इसके करने के पश्चात उसके और 76 प्रतिशत पुरुष प्रशिक्षणार्थियों ने भी सर्वसम्मति से स्वीकार किया है कि इस 12 दिन की कार्यशाला को करने के पश्चात उनके शिक्षण कौशल में वृद्धि हुई है और 2 प्रतिशत महिला व 8 प्रतिशत पुरुषों ने इसमें केवल अनिश्चितता व्यक्त की है और 8 प्रतिषत पुरूष इससे असहमत थे। इससे यह प्रतीत होता है कि महिला शिक्षकों ने व पुरुष शिक्षकों ने स्वीकार किया कि इस कार्यशाला के द्वारा उनके शिक्षण विषय के कौशलों में वृद्धि हुई।

2. **ज्ञान में वृद्धिः**– इस कार्यशाला में प्रतिभाग करने के पश्चात् 80 प्रतिशत महिला व 78 प्रतिशत पुरुष प्रशिक्षणार्थियों ने सहमत किया है कि इसके द्वारा उनमें सैद्धान्तिक ज्ञान में वृद्धि हुई। साथ ही 12 महिला व 16 प्रतिशत पुरुष ने इस सन्दर्भ में अपनी असहमति व्यक्त की है। वास्तव में किसी भी कार्य की सफलता हेतु उस विषय का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है।

3. **गतिविधियाँ व्यक्तित्व विकास में सहायकः**– 12 दिवसीय कार्यशाला में प्राथमिक व माध्यमिक सेवारत शिक्षकों में से 72 प्रतिशत महिलाओं ने व 80 प्रतिशत पुरुष शिक्षकों ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया इस कार्यशाला को दो वर्ष

में दो बार करने के पश्चात् उन्होंने पाया कि इसमें करायी गयी विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ वास्तव में उनके व्यक्तित्व विकास में सहायक रही। साथ ही 18 प्रतिशत महिला व 16 प्रतिशत पुरुष शिक्षकों ने इसमें केवल असहमति व्यक्त की है। यह देखा गया कि इस बिन्दु पर महिला व पुरूष शिक्षकों की सहमति बराबर रही।

4. **नवाचारों का प्रयोगः**— हल्द्वानी केन्द्र में अध्ययनरत बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों में से 90 प्रतिशत महिला शिक्षकों ने एवं 80 प्रतिशत पुरुष शिक्षकों ने सर्वसम्मति से यह माना कि यह कार्यशाला नवाचारों पर केन्द्रित थी। यह भी माना कि इस तरह की कार्यशालाओं में जो भी ज्ञान दिया जाता है उसको अगर तकनीकी माध्यमों (कम्प्यूटर, इंटरनेट) का प्रयोग करके पढ़ाया/सिखाया जाता है तो वे अधिक लाभप्रद सिद्ध होते हैं। वही दूसरी ओर 6 प्रतिशत महिला शिक्षकों तथा 12 प्रतिशत पुरुष शिक्षकों ने भी नवीन तकनीकी के प्रयोग में अपनी असहमति व्यक्त की। इसके विपरीत केवल 2 प्रतिशत पुरुष शिक्षकों ने इसमें अपनी अनिश्चितता असहमति व्यक्त की।

5. **परस्पर अन्तःक्रिया से लाभः**— माध्यमिक व माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों में से 70 प्रतिशत महिला व 70 प्रतिशत पुरुष शिक्षकों ने यह सर्वसम्मति से स्वीकार किया कि इसके द्वारा उन्हें दूसरे प्रतिभागियों से परिचर्चा करने का अवसर मिला, जिससे वे प्रतिभागियों के बीच अनुभव के आदान–प्रदान तथा परस्पर एवं दूसरे से सीखने के साथ ही सन्दर्भदाताओं के साथ परिचर्चा करने का अवसर प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त 20 प्रतिशत महिला शिक्षकों व 26 प्रतिशत पुरुष शिक्षकों ने इसमें अपनी असहमति व्यक्त की। परिचर्चा करने का अवसर प्राप्त हुआ जो कि उनके व्यक्तित्व विकास में सहायक रहा। केवल 10 प्रतिशत महिला शिक्षकों एवं 4 प्रतिशत पुरूष शिक्षकों ने इस आयाम में अपनी अनिश्चितता व्यक्त की।

6. **सम्प्रेषण कौशल का विकासः**— कार्यशाला जैसा कि प्रयोगात्मक ज्ञान पर अधिक बल देती है साथ ही व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास पर केन्द्रित होती है। इन प्रशिक्षणार्थियों में से 72 प्रतिशत महिला शिक्षकों एवं 64 प्रतिशत पुरुष शिक्षकों ने यह सर्वसम्मति से माना कि इसे करने के पश्चात उन्होंने पाया कि उनमें व्यक्तित्व विकास का एक महत्वूर्ण आयाम है जिसके बिना शिक्षक की दक्षता अधूरी रह जाती है। सम्प्रेषण कौशल का विकास हुआ, साथ ही 22 प्रतिशत महिला शिक्षकों ने 20 प्रतिशत पुरुष शिक्षकों ने इसमें अपनी असहमति व्यक्त की।

7. **पाठ्यक्रम में परिवर्तनः**— जैसा कि पाठ्यक्रम शिक्षण–अधिगम का महत्वपूर्ण केन्द्र बिन्दु होता है। समाज में जिस प्रकार से नित नये परिवर्तन होते हैं तो यह भी माना जाता है कि पाठ्यक्रम भी उसी की आवश्यकता के अनुसार परिवर्तित किया जाय। साथ ही इसके माध्यम से नये नवाचारों, तकनीकी के प्रयोग की भी जानकारी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर कार्य कर रहे शिक्षकों को दी जानी चाहिए जिससे कि शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता का विकास हो। इस कार्यशाला के माध्यम से 90 प्रतिशत महिला शिक्षकों व 84 प्रतिशत पुरुष शिक्षकों ने सर्वसम्मति से यह माना कि इग्नू बी०एड० पाठ्यक्रम में परिवर्तन कार्यशाला से सन्दर्भित प्रकरणों में किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त 8 प्रतिशत महिला शिक्षकों व 14 प्रतिशत पुरुष शिक्षकों ने इसमें अपनी असहमति व्यक्त की। साथ ही 6 प्रतिशत महिला व 2 प्रतिशत पुरुष शिक्षक पाठ्यक्रम में परिवर्तन किये जाने से अनिश्चितता की स्थिति में थे।

महत्वपूर्ण विषयः—

क्र०सं०	विषय	प्रतिशत
1	पाठ योजना	80%
2	सूक्ष्म शिक्षण	70%
3	इकाई योजना	75%
4	ब्लू प्रिन्ट	65%
5	व्यक्तित्व विकास के विभिन्न आयाम	85%
6	योग और मानसिक स्वास्थ्य	80%

इग्नू बी०एड० प्रशिक्षणार्थियों के द्वारा इस कार्यशाला को और अधिक प्रभावशाली बनाने हेतु सुझावः–

1. ब्लू प्रिन्ट, पाठ योजना, सूक्ष्म शिक्षण जैसे महत्वपूर्ण प्रकरणों को अधिक सत्र दिये जाने चाहिए।
2. श्रव्य–दृश्य यांत्रिक उपकरणों को और अधिक प्रयोग कर कार्यशाला को रुचिकर बनाया जा सकता है।
3. कार्यशाला में पाठ्यक्रम से अलग कुछ आधुनिक विषयों व प्रकरणों जैसे जनसंख्या शिक्षा, किशोर शिक्षा, यौन शिक्षा आदि का समावेश किया जाना चाहिए।
4. 'योग व मानसिक स्वास्थ्य' के प्रकरण को सैद्धान्तिक ज्ञान के अतिरिक्त प्रयोगात्मक करके सिखाया जाना चाहिए।
5. समूह चर्चा के सत्रों को और अधिक आयोजित किया जाना चाहिए जिससे कि प्रतिभागियों का सर्वांगीण विकास हो सके।
6. कम्प्यूटर विषय पर आधारित प्रकरण को भी कार्यशाला में सम्मिलित किया जाना चाहिए।
7. 'बाल मनोविज्ञान' से सन्दर्भित विषयों को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए।
8. सबसे महत्वपूर्ण सुझाव 'निर्देशन व परामर्श की माध्यमिक शिक्षा में आवश्यकता' विषय पर भी सन्दर्भदाताओं द्वारा व्याख्यान दिया जाना चाहिए।
9. इसके अतिरिक्त समाज में मूल्यों का नित ह्रास हो रहा है। इस हेतु 'मूल्यपरक शिक्षा' विषय को भी स्थान दिया जाना चाहिए।
10. 'समय प्रबन्धन' से सम्बन्धित प्रकरण को कार्यशाला के प्रथम दिवस में सम्मिलित किया जाना चाहिए।

निष्कर्षः–

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कार्यशाला में प्रतिभाग करने के पश्चात् प्रशिक्षणार्थियों का व्यक्तित्व विकास होता है। सर्वाधिक महिला शिक्षकों ने बताया कि इस कार्यशाला से शिक्षण कौशल व नये ज्ञान में वृद्धि हुई। पुरुष शिक्षकों ने माना कि शिक्षण कौशल व नये ज्ञान में वृद्धि का होना निश्चित हुआ है। शैक्षिक गतिविधियों के विभिन्न आयामों में से सबसे कम प्रतिशत अन्तःक्रिया से लाभ एवं सम्प्रेषण कौशल के विकास का किया गया। सबसे अधिक महिला एवं पुरूष शिक्षकों ने पाठ्यक्रम में परिवर्तन किये जाने को आवश्यक बताया। जिससे कि शिक्षक नवीन प्रत्ययों को जान सके व अपना व्यक्त्वि विकास कर सके। महिला शिक्षकों एवं पुरुष शिक्षकों ने सर्वाधिक सहमति कार्यशाला में कराई गई विभिन्न प्रकार की शैक्षिक व व्यावहारिक गतिविधियों को समान रूप से दी। अध्ययन के परिणामों में यह भी देखा गया कि कार्यशाला में प्रयुक्त किये गये विभिन्न आयाम जिसमें सम्प्रेषण कौशल का विकास, सैद्धान्तिक ज्ञान में वृद्धि विभिन्न कौशलों का विकास, नवाचारों का अधिक से अधिक प्रयोग सभी पर महिला व पुरुष शिक्षकों ने अपनी सहमति देकर इसको आवश्यक बताया। इस कार्यशाला से सम्बन्धित प्रतिक्रिया को जानने के पश्चात् ऐसा प्रतीत होता है कि वास्तव में यह 12–12 (24) दिनों की दो कार्यशाला प्राथमिक व जूनियर/माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों को न केवल बी०एड० की डिग्री प्रदान करने तक सीमित रही बल्कि यह उनको वास्तव में एक शिक्षक के अन्दर किन–किन कौशलों का होना आवश्यक है। दूसरे शब्दों में कहा जाय कि शिक्षक को अपने शिक्षण व्यवसाय में दक्ष बनाने में सफल रही। प्रशिक्षणार्थियों ने सर्वसम्मति से स्वीकारा कि इस कार्यशाला में प्रदान किया गया ज्ञान वास्तव में भविष्य में शिक्षण कार्य में सहायता प्रदान करेगा। और यह भी माना कि शायद इतना विस्तृत सैद्धान्तिक व व्यवहारिक ज्ञान उनके द्वारा विभिन्न प्रकार के संस्थागत पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के पश्चात भी प्राप्त नहीं होता। सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथ्य है कि इग्नू बी०एड० पाठ्यक्रम की अनुदेशन सामग्री का स्तर बहुत ऊँचा है, जो कि राष्ट्रीय स्तर व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित मानकों में खरी उतरी है। दूरस्थ शिक्षा के द्वारा प्रदान की जाने वाली यह डिग्री उनकी उन्नति व ज्ञान वृद्धि में सहायक रही।

इन कार्यशालाओं के माध्यम से ही उन्हें आत्ममूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त हुआ, जो शायद अन्य प्रक्रिया से गुजरने के पश्चात प्राप्त नहीं हो पाता। इस तरह की कार्यशालाओं का आयोजन समय–समय पर किया जाना चाहिए।

संदर्भ सूची

1. एम०एच०आर०डी० (1986, 1992). 'नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन' गवर्नमेन्ट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
2. नेशनल पॉलिसी ऑफ एजुकेशन (1986). मिनिस्ट्री ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट' गवर्नमेन्ट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
3. एन०सी०टी०ई० (1998). 'कॉम्पिटेंसी बेस्ड एण्ड कमिटमेंट ओरिएंटेड टीचर एजुकेशन फॉर क्वालिटी स्कूल एजुकेशन', गर्वनमेन्ट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।
4. पाण्डेय क्षमा, सिंह रीना (2006). 'आधुनिक भारतीय शिक्षा, एन०सी०ई०आर०टी० नई दिल्ली, पृष्ठ 27–33.
5. सिंह रीना, साहू पी०के० (2006). 'आधुनिक भारतीय शिक्षा', एन०सी०ई०आर०टी० नई दिल्ली, पृष्ठ 64–74.